पुस्तक समीक्षा

इस स्थायी-स्तम्भ के अन्तर्गत हम धनात्मक विचारधारा की पुस्तककों की परिचयात्मक समीक्षा प्रकाशित करते हैं। सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीयता से सम्बन्धित नव प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा हेतु लेखक पुस्तक की एक प्रति निम्नलिखित पता पर प्रेषित कर सकते हैं— सम्पादक, धर्मायण, महावीर मन्दिर, पटना, पटना रेलवे जंक्शन के निकट, पटना 800001. (समीक्षा हेतु डिजिटल प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।)

तत्त्वचिन्तन, लेखक- मार्कण्डेय शारदेय, ISBN-97893-90502-28-8, मूल्य-250.00/ प्रथम संस्करण-2021,

© मार्कण्डेय शारदेय, प्रकाशक सर्व भाषा ट्रस्ट

G-65-66, Gali No. - 20,
Rajapuri, Uttam Nagar New Delhi -59
E-mail: sbtpublication@gmail.com
Website : www.sarvbhashatrust. com,
Mob. : +91 81786 95606,
मुद्रक : आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली.

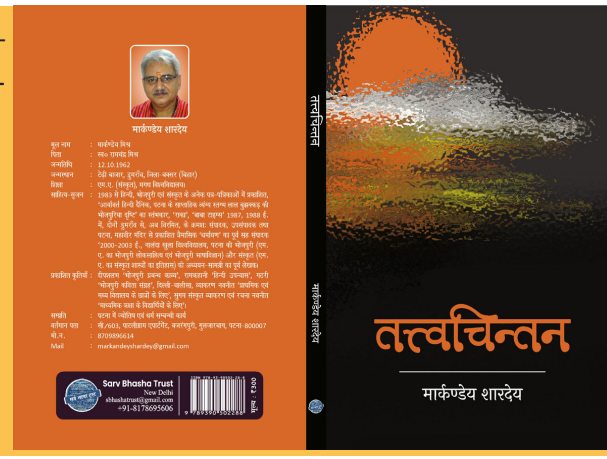

पं० मार्कण्डेय शारदेय की नवीनतर प्रकाशित पुस्तक तत्त्वचिन्तन धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर लिखे गये उनके आलेखों के संकलन हैं। कुल 184 पृष्ठों की इस पुस्तक में 51 आलेख हैं, जिन्हें लेखक ने स्वयं दो भागों में बाँटा है- आरम्भ के 27 आलेख वर्ष भर मनाये जाने वाले पर्वों तथा सामयिक कृत्यों से विवेचन हैं तो आगे के आलेख चिरन्तन चिन्तनपरक हैं, जिनमें भारतीय चिन्तन की प्रासंगिकता तथा उनकी उपादेयता का चिन्तन प्रस्तुत किया गया है। वे एक आलेख में शुक्राचार्य के द्वारा शराबबंदी का उल्लेख करते हैं, अन्य में माता-पिता की सेवा करने के फलों का विवेचन सरल शब्दों में करते हैं। सभी आलेख छोटे-छोटे हैं किन्तु अपने कथ्य को स्पष्ट करने में वे पूर्ण हैं। लेखक ने विभिन्न पुराणों एवं अन्य सनातन ग्रन्थों से उद्धरण देकर कथ्य को प्रामाणिक तथा स्पष्ट बनाया है। अपनी बात रखने के लिए कहीं-कहीं कहानियों से आलेख प्रारम्भ करना उनकी विशेषता है, जिससे पाठकीयता में वृद्धि हुई है। आलेखों के शीर्षक काव्यात्मक है। जब वे गंगा की वर्तमान स्थिति पर लिखने लगते हैं तो उस आलेख का शीर्षक देते हैं- "रो मत गंगे! रो मत।" इनमें से अनेक आलेख इस पत्रिका धर्मायण में पूर्व प्रकाशित भी हैं, जिन्हें सामान्य पाठकों के लिए संक्षिप्त तथा सरलीकृत कर प्रकाशित किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक की भाषा तथा शैली आम पाठक को ध्यानमें रखकर निर्धारित की गयी है, अतः यह तत्त्वचिन्त सबी पाठकों को आकृष्ट करेगा ऐसा विश्वास है।

-भवनाथ झा